

Self Respect

10-07-2014



✓ जैसे बाप शान्ति का, सुख का सागर है, बच्चों को भी ऐसा शान्ति का, सुख का सागर बना रहे हैं फिर जाकर शान्तिधाम में विराजमान होना है ।

✓ तो बाप को, घर को और सुखधाम को याद करना है । यहाँ तुम जितना- जितना इस अवस्था में बैठते हो, तुम्हारे जन्म- जन्मान्तर के पाप भस्म होते हैं, इसको कहा जाता है योगाग्नि । सन्यासी कोई सर्वशक्तिमान् से योग नहीं लगाते । वह तो रहने के स्थान ब्रह्म से योग लगाते हैं । वह हैं तत्त्व योगी, ब्रह्म अथवा तत्त्व से योग लगाने वाले ।



- ✓ बाप तुम्हारे निमन्त्रण पर आये हैं । तुमको याद दिलाते हैं, तुमने हमको कहा है कि आओ, हमको पतित से पावन बनाओ ।
- ✓ अब बाप ने समझाया है तुम पर ब्रहस्पति की दशा बैठी हुई है । यह है बेहद की बात । बेहद की दशा सब पर बैठी है ।
- ✓ अभी बाप जीते जी मरना सिखला रहे हैं । परवाने शमा पर फिदा हो जाते हैं ।



✓ आगे तुम भी कुछ नहीं जानते थे । अब जैसे बाप की बुद्धि में यह सब है. ऐसे तुम भी बनते हो । सुख का, शान्ति का सागर तुम भी बनते हो ।

✓ तो रात को सोते समय भी बाप को याद कर ऐसे-ऐसे ख्यालात करते सो जाना चाहिए । हो सकता है पिछाड़ी में रात- दिन तुम नींद को जीतने वाले बन जाओ । फिर याद में ही रहेंगे, बहुत खुशी रहेगी ।



✓ यह कमाई ऐसी है, इसमें लड़ाई आदि की बात नहीं, इसको कहा जाता है गुप्त । तुम हो इनकागनीटो वारियर्स । 5 विकारों के साथ तुम लड़ते हो । तुमको अननोन वारियर्स कहा जाता है ।

✓ तुम व्यापार करते हो अविनाशी ज्ञान रत्नों का ।

✓ तुम बच्चों को ही बाप आकर वर्सा देते हैं, यह डामा में नूँध है । अभी कलियुग अन्त तक यह आत्मार्यें आती रहती हैं, वृद्धि को पाती रहती हैं ।



✓ वह है बेहद का बाप, उसने ही स्वर्ग की स्थापना की थी । कल की बात है, तुम स्वर्गवासी थे । यह तो बहुत सहज बात है । बच्चों को अच्छी रीति समझकर और समझाना है । खुशी में भी रहना है । अभी हम सदैव के लिए बीमारियों से छूट कर 100 परसेन्ट हेल्दी, वेल्दी बनते हैं ।

✓ वरदान:- सहज योग की साधना द्वारा साधनों पर विजय प्राप्त करने वाले प्रयोगी आत्मा भव



✓अच्छा! मीठे- मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात- पिता
बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप
की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

